May-2022 E-ISSN – 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue 295

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue - 295 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
May-2022

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	English Section		
01	Reading Values and Desires in Awadhesh Sinha's *Yayati In A New Glow*	**Dr Ravindra Singh**	05
02	Impact of Western Imperialism in Post-Colonial India: Replica in Ruth Prawer Jhabvala's Novels	**Dr. Lakhan R. Gaidhane**	09
03	Imagery and Symbolism in Nissim Ezekiel's Poetry	**Dr. Sandeep Wagh**	13
04	A Chronological Study of Digitization in Media and Evolution of Social Media	**Dr. Santosh Tripathi**	16
05	Social Media and Human Intelligence for Better National Security	**Dr. Vinod Gajghate**	25
06	A Study of Locus of Control Among Male & Female College Students."	**Dr. Kalpana Vitore**	30
07	Effects of Oxidant/Monomer Ratio on the Structural and Optical Properties of Polypyrrole Prepared Via Chemical Oxidative Polymerization	**C. T. Birajdar**	33
08	Online Marketing- Its Benefits and Channels	**Dr. Minakshi Soni**	38
09	Land Use and Land Cover Change in the Chandwad Tahsil of Nashik District	**S. R. Nikam**	41
10	Role of Self-Help Group in Rural Women Empowerment in India: A Study of North Maharashtra Region	**Dr. Rajkumar Kankariya, Dr. Anil Dongre**	49
11	A Study of the Interpersonal Behaviour Style Among N.C.C. And Non-N.C.C. College Students	**Dr. Ananta Kotkar**	54
12	Major Challenges of Indian Economy	**Prof. Yuyraj Jadhav**	59
	हिंदी विभाग		
13	राष्ट्रभाषा हिंदी का संदर्भ	**प्रो. मोहन**	63
14	'दुखमोचन' उपन्यास में सामाजिक विमर्श	**डॉ. सरोज सोलंकी**	68
15	वैचारिक मंथन और आत्म चिंतन का आत्म साक्षात्कार: कालजयी	**डॉ. रुपाली चौधरी**	71
16	आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ : उनके पारिस्थितिक एवं सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के परिप्रेक्ष्य में	**डॉ. सुभाष दोंदे**	78
17	अल्मा कबूतरी : कबूतरा जाति का दर्दनाक आख्यान	**डॉ. संगीता चित्रकोटी**	86
18	अमृता प्रीतम के अनुदित उपन्यासों में प्रेम का स्वरूप	**डॉ. शोभा रावत**	90
19	इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका	**डॉ. माधुरी जोशी**	99
20	प्रेम का समाजशास्त्रीय अध्ययन	**डॉ. डी. एम. मुल्ला**	102
21	तुलनात्मक अनुसंधान : स्वरूप और महत्त्व	**डॉ. माधुरी जोशी**	106
22	वन्य जीव (संरक्षण) संशोधन विधेयक -२०२१: एक समीक्षात्मक अध्ययन	**डॉ. सुभाष दोंदे**	109
	मराठी विभाग		
23	आदिवासींची अंगाईगीते	**डॉ. अंजली मस्करेन्हस**	115
24	सभासद बखरीत शिवरायांच्या अलौकिक व्यक्तिमत्त्वाचे वर्णन	**डॉ. किशोर पाठक**	121
25	लोकनाथ यशवंत यांच्या कवितेचे वेगळेपण	**डॉ. तीर्थराज कापगते**	124

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue - 295 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
May-2022

अल्मा कबूतरी : कबूतरा जाति का दर्दनाक आख्यान

डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी
असोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
कोएसो लक्ष्मी-शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी, अलीबाग
E-mail - sangitachitrakoti@gmail.com

अक्तूबर 1936 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था " अपराधी जनजाति अधिनियम के विनाशकारी प्रावधान को लेकर मैं चिंतीत हूँ। यह नागरिक स्वतंत्रता का निषेध करता है। इसकी कार्यप्रणाली पर व्यापक रूप में विचार किया जाना चाहिए और कोशिश की जानी जाहिए कि इसे संविधान से हटाया जाए। किसी भी जनजाति को 'अपराधी' करार नहीं दिया जा सकता। यह सिध्दांत न्याय और अपराधियों से निपटने के किसी भी सभ्य सिद्धांत से मेल नहीं खाता ।" 1 आज भारत आजाद होकर 75 साल हो गऐ फिर भी आदिवासी जातियों को हम समान प्रवाह में नही ला पाए। वास्तव में आदिवासी ही मूल निवासी है जो जंगलों और घाटियों में बसते थे। वे प्रकृति के पूजारी थे, उनकी अपनी संस्कृति थी परंतु भूमंडलीकरण की ओर दौड़ रहे समाज ने आदिवासियों को उन्ही की भूमि से बेदखल कर दिया। इनकी समस्याओं का कोई अंत नही। कातकरी, ठाकर, भिल पारधी, सपेरे, गोंड, कंजर, मीणा ऐसी कितनी ही आदिवासी जातियाँ सभ्य समाज के हाशियों पर डेरा लगाएँ सदियाँ गूजार देती है परंतु आज भी उनके परिवर्तन की कोई गुंजाइश नही दिखाई देती।अक्सर वे उत्पीड़न का शिकार बनते है। महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामले समाज को शर्मसार करनेवाले है। ऐसा ही है कबूतरा जाति का दर्दनाक दस्तावेज जिसे मैत्रेयी पुष्पा ने 'अल्मा कबूतरी ' उपन्यास में प्रस्तुत किया है। कबूतरा आदिवासी बुंदेलखंड में रहते है। उन्हें जरायमपेशा अपराध जीवि माना जाता है। वास्तव में आजीविका का दूसरा माध्यम उपलब्ध न होने के कारण मजबुरी में उन्हें गलत काम करना पड़ता है। इनकी आजीविका चोरी पर निर्भय है "दारू बेचना, चोरी करना और बार बार जेल जाना यही है उनके जीवन की सच्चाई। बच्चों को बचपन से ही इस धंदे से अवगत कराया जाता है। उसके लिए लाठी भांजना, गुलेल चलाना, कुल्हाडी का वार करना आदि बातें सिखाई जाती है। आलस इनका दुश्मन है ये शिकार नही करेंगे तो शिकार हो जाएगें। शराब पीने की आदत भी बच्चों को बचपन से ही डाली जाती है ताकि बच्चे ताव में आकर चोरी करें। दारू का धंदा कबूतरा कौम के लिए इज्जत का धंदा माना जाता है।

कबूतरा कौम का समूचा संघर्ष रोटी के लिए है। इनकी जिंदगी पशु से भी बदतर है। भूख की आग मिटाने के लिए जो भी सामने आए उसे खाया जाता है फिर मरा बैल भी इनके मुँह में पानी लाता है। मालिया इसका समर्थन करता है - "बैल हो की गाय, काटे पीछे सब मांस ही हो जाता है।" 2 मरा बैल कबूतरी बस्ती में छप्पन भोग हो जाता है। मनोज सोनकर की' डांगर कविता इसी तथ्य को उजागर करती है

"मरी भैस पर। टूट पड़े थे भूखे नंगे लोग
कोई टांग लेकर भाग रहा था
कोई पुंछ मरोड रहा था। औरते सींग उखार रही थी औरतें झगड़ रही थी।
छिनरी ! बुजरी गडजरी बोट्टी आदि शब्द एक दूसरे से टकरा रहे थे।
एक दूसरे पर कीचड उठा रही थी।" 3

मैत्रेयी पुष्पा स्वंय लिखती है -

" स्वतंत्र भारत में समाज की मुख्य धारा के किनारे फेंक दिए गए इन अदृश्य लोगों की लड़ाई आज भी जारी है आज भी वे कमंद और मीडिया लगाकर हमारी दुर्ग दीवारों पर बढ़ते हैं तो ऊपर बैठे हम तीर कमान

साधे उनका शिकार करने का सुख पाते है।" 4 आज भी वह जीवन जीने के लिए संघर्ष कर रहा है कबुतरा पुरुष या तो जंगल में रहता है या जेल में। स्त्रिया शराब की भट्टियों पर या कज्जा लोगों के बिस्तरों पर। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र राणा कबूतराओं के जीवन की व्यथा वेदना कापी में लिखता है जो उसका भोगा हुआ सच है...."पिटना - पीटना, मरना- मारना हमारी जिंदगी है। गुनिया, ओझा, मुखिया और पुलिस हमारे भगवान हैं। कज्जा लोग माईबाप और मालक। भूख प्यास हमारी गुंइया है। देह गर्मी से जलने लगती है, हम चोरी से तालाब में नहा लेने है। जाड़े में हड्डियाँ चटकने लगती है, जंगल में से इंधन चुराकर देह सेक लेते हैं। सब लोग हमें माफ कर दे। बस इतना ही हम चाहते है।" 5 "सच्चाई से रहो, इमानदारी से जियो, नफरत त्याग दो यह सब किताबों में लिखा है। एकमद झूठ। यह सब हमारे लिए नहीं। लोग हमें डराते हैं, हम डर के मारे झूठ बोलते है, बेईमानी पर चलते हैं, नफरत करते है। " 6

उपर्युक्त वाक्यों से कबूतरा जाति का यथार्थ जीवन हमारे सामने आ जाता है। इस उपन्यास में रामसिंह को पढ़ाने की उसकी माँ की जिद भी शामिल है। पतिव्रता स्त्री 'भुरी' अपने पति के मौत का बदला लेने के लिए रामसिंह को पढ़ाना चाहती है। वह प्रण करती है" मैं अपने मर्द की ब्याहता खूद को तब मानूंगी जब रामसिंह को पढ़ा-लिखाकर इसी कचहरी के दरवाजे खडा कर दूँगी। भले इस सफर में मुझे दस मर्दों के नीचे से गुजरना पड़े विद्यारत्न के आगे देह का खजाना कुछ भी नहीं। 'भुरी' कबूतरा बस्ती की पहली माँ थी जिसने अपने बेटे को कुल्हाडी-डंडा न थमाकर पोथी-पाटी पकडाई। बेटा रामसिंह कबूतरा जीवन का बोझ ना ढोए इसीलिए भूरी बदनामी का वजन ढोती रही" 7 बेटे का उजाले भरा रास्ता माँ की देह से गुजर रहा था। बेटे के लिए विद्या का दामन थामा था भूरी ने अतः माते, पुजारी, सिपाही मास्टरों के जारिए रामसिंह के लिए इज्जत खरिदनेवाली माँ बेहिचक बेइज्जत होती रही।आखिरकार भूरी अपने बेटे रामसिंह को अपराधी जिंदगी से अलग रखकर पढ़ा-लिखाकर अध्यापक बनाती है।

रामसिंह की माँ भूरी और पिता वीरसिंह ने एक बार राजा का भाषण सुना की अब घुमन्तु लोग भी आजाद है। वे अपराधी नहीं रणबाकुरे है जिन्हें सेना में भरती होकर भारत की लाज बचानी होगी। वीरसिंह राजा की बात से प्रभावित होकर भारत माता की सेवा के लिए पलटन में भरती होने के लिए गया। परंतु फॉर्म पर 'कबुतरा जाति' लिखते ही उसे कान पकड़कर बाहर कर दिया गया। इनकी तरफ पूर्वग्रह दुषित दृष्टीकोण से ही देखा जाता है। चोरी करने आया होगा। कहकर उसे पलटन में शामिल नहीं किया जाता। दूसरे एक प्रसंग में भूरी का भाई डकैती के जुर्म में पकडा गया जब कि पिछले दस दिन से वह वीरसिंह के साथ था। वीरसिंह अर्जी लिखवाकर उसे बेकसूर साबित करना चाहता था। उसे लगता था विद्या के धनी विज्ञान होते है परंतु उन्ही एढे लिखे विद्वानों ने मामला उलट दिया। वीरसिंह कचहरी के दरवाजे पर गिडगिडाया, अकेला लढता रहा परंतु उसे पटक-पटक कर इतना मारा कि वह नारियल की तरह दरारों में फट गया और वीरसिंह जिंदगी से रिहा हो गया। क्या कसूर था वीरसिंह का? अन्याय के खिलाफ विद्रोह कर शोषण रहित जीवन जीना चाहता था, यही था ना उसका कसूर ?

इसी वीरसिंह और भूरी का बेटा रामसिंह कितना खुश था कि उसे अध्यापक की नोकरी मिली। परंतु पहली तनख्वाह का दिन , थानेदार उसे रोककर गालियों की बौछार कर साथ-साथ अपना हप्ता माँगता है। कौम की औरतों के लिए थानेदार बदजुमानी इस्तमाल करता है। "साले, तेरा टाईम खरब हो रहा है? अम्मा की छातियाँ देखी है, समय खाए लटक गई है। बहन न हो तो बदले मैं कोई और ही दिला। हम भी जोरू बच्चों को छोड़कर यहाँ पड़े है।" 8 रामसिंह इस अन्याय के खिलाफ विद्रोह करना चाहता है परंतु उसकी आवाज दबा दी जाती है। पत्नी गर्भवती होने के कारण रामसिंह हप्ता दे नही पाता तो हवलदार गंदी जुबान इस्तमाल करता है।

" हरामी हमारा हक मारने के लिए जोरू गाभन की थी ? हमारी ताकत मूल गया ? इस औरत को अभी नंगी कर दे बोल?" 9 इस तरह राममिंह पढ-लिखकर भी ना इज्जत पा सका ना रोटी।

राममिंह की मृत्यु के पहले अपनी बेटी अल्मा को दातारनगर के दुर्जन कबूतरा के पास हिफाजत के लिए रखता है। परंतु दुर्जन कबूतरा नाम के साथ कर्म से भी दुर्जन निकला। राममिंह के मृत्यु के बाद बाद उसकी बेटी अल्मा को सुरजभान को बेचता है। सुरजभान एक राजनीतिक नेता है। सुराजभाम या ह अनमोल माल, हाँ ! माल ही क्योंकि इससे ज्यादा कबूतरा स्त्री की औकात नहीं समझी जाती। वह अल्मा पर ऐसा जबरी बलात्कार करता है कि अल्मा खून कि पोखर हो जाती है। सुरजभान उसके साथ क्रूरता से पेश आता है। उसे दिन-रात बाँधकर रखता। उसकी बाँह पर वह "अल्मा कबूतरी" शब्द गोंदता है ताकि उसे कबूतरी जान मर्द दुगनी ताकत से उस पर हमला करे। अर्थात अल्मा के साथ ज्यादा से ज्यादा बर्बरता इस्तमाल करने का मौका सूरजभान अपने मित्र, शत्रुओं को देता है। अल्मा मौका पाकर वहाँ से भागने में सफल तो हो जाती है परंतु फिर श्रीराम शास्त्री के चंगुल में फँस जाती है और वहाँ भी उसे देह लूटाने के लिए मजबूर किया जाता है। इस तरह कबूतरा जाति की स्त्रियाँ यौन शोषण से व्यथित है। अल्मा जीवन के कठोर अनुभवों में पक रही थी। वह हर स्थिति को सीढि बनाकर दीवारे फांदती कबूतरी है। अंत में श्रीराम शास्त्री के मृत्यु के बाद वह चालाकी से बबीना विधानसभा की सीट प्राप्त कर समाजकल्याण मंत्री बन जाती है।

इसी उपन्यास में कदम कबूतरी के बेटे राणा को भी पढ़ने का अधिकार मिल जाता है। राणा स्कूल में दाखिल हुआ परंतु यहीं से उसकी आदिवासी होने का यातानाओं का दौर शुरू हुआ। स्कूल के बच्चों राणा का बस्ता पीपल पर टांग दिया। राणा पीपल पर चढने ही लगा था मास्टर जी को पता चला जो आकर उसके कमर पर कोडा मारा "साले, यह नहीं देखता की पीपल पर देवताओं का वास होता है। स्कूल जैसी पवित्र जगह में बैठ जाने दिया तो तू हमार देवाताओं के मूंड पर नाचेगा ? स्कूल मे घूस ही आया है तो सजा भुगत" 10 कहकर राणा को आधे दिन स्कूल की चौहद्दी के बाहर मुर्गा बनाकर खडा किया तब कही मास्टर को संतोष मिला।

दुसरे उदाहरण में राणा को 'पानी' की समस्या से गुजरना पड़ा। मास्टरजी ने जल को छुने को मनाही कर दी थी। प्यास के कारण गला सुखने लगा तो मास्टरजी ने राणा को उस तालाब का पानी पिने के लिए कहा जहाँ कज्जा लोग पने बच्चों की टट्टी-पेशाब फेंकते हैं, औरते, आदमी शीचते है। राणा देखता ही रहा क्यों कि अभी दो दिन पहले मास्टरजी ने 'पानी की स्वच्छता' का पाठ पढाया था। विद्या के क्षेत्र में ऐसे भी शिक्षक है जो जातियता को मानते है और अपने ही छात्रों का शोषण करते है।

मंसाराम की पत्नी सौतलेपन की भावना से स्कूल से लौटते राणापर कुत्ते का हमला करवाती है। कुत्ते ने अपनी नुकीला दांतो से राणा का मांस फाड़ दिया, राणा दर्द से चीख रहा था, अपने आप को बचाने की कोशिश कर रहा था परंतु तमाशा देखनेवाले कज्जा लोगों को लगा की कुत्ते मे लड़कर तमाशा दिखा रहा है। किसी ने ताली बजाई, किसी ने पैसे फेंके, किसी ने कुत्ते को शाबासी दी। लोगोने इस प्रसंग का आनंद उठाया लेकिन किसी ने भी राणा का दर्द नही जाना।

इस तरह सदिया अतीत के गर्भ में समा गई लेकिन यहाँ घिनौनी वर्ण-व्यवस्था आज भी सीना तानकर खड़ी है। देश आजाद हो गया, यहां के लोग आजाद हो गए लेकिन आदिवासी आजाद नहीं हुए। वे सभ्य समाज के गुलाम ही रहे। केवल दिखावे के लिए समानता का ढिंढोरा पिटा गया लेकिन ये बाते कागज पर ही सजाई रही। परंतु आज आदिवासी प्रचलित व्यवस्था को नकार रहे है और ऐसा लगता है भविष्य में इनकी स्थिति में अवश्य परिवर्तन आएगा। कहीं सुने हुए गीतों के बोल याद आ रहे है–

"ले मशालें चल पडे है लोग मेरे गाँव के
अब अंधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के।"

संदर्भ -

1. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, पृष्ठ--08
2. वहीं पृष्ठ - 50
3. रमणिका गुप्ता, दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार, समीक्षा प्रकाशन, मुंबई, पृष्ठ - 35
4. मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, पृष्ठ - मुखपृष्ठ
5. वहीं पृष्ठ - 99
6. वहीं पृष्ठ - 99
7. वहीं पृष्ठ - 74
8. वहीं पृष्ठ - 101
9. वहीं पृष्ठ - 103
10. वहीं पृष्ठ - 81